इकाई 3 नगर*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 नगर

3.3 नगर का स्थानिक विन्यास

3.3.1 सघन क्षेत्र प्रतिमान

3.3.2 क्षेत्रीय प्रतिमान

3.4 नगरों का वर्गीकरण

3.5 नगरों के कार्य

3.6 नगर तथा वैश्विक सुधार

3.7 सारांश

3.8 संदर्भ

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे–

- नगर की परिभाषा तथा उसके समाजशास्त्रीय संदर्भ;
- नगर की संरचनात्मक पद्धति;
- नगर के प्रमुख कार्यों के आधार पर उनके प्रकारों का अध्ययन;
- नगर के वृहत्तर क्षेत्र की बसावट में नगर के योगदान का विश्लेषण;
- नगरों का वैश्विक सुधारों में योगदान।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने नगरीकरण की अवधारणा की व्याख्या की। हम प्रायः नगरीय केंद्रों को नगर समझा लेने की भूल कर जाते हैं। नगरीय या शहरी शब्द सभी गैर नगरीय भू–भागों के लिए इस्तेमाल होता है – जैसे नगर, कस्बा तथा उपनगरीय क्षेत्र इस इकाई में हम विशेष रूप से नगरों के बारे में बतायेंगे।

'नगर' या 'शहर' (city) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ''सिविटास'' (Civitas) शब्द से हुई है जिसका अर्थ है नागरिकता या सामुदायिक। नगर प्रायः लोगों की बड़ी बसावट को कहा जाता है। यद्यपि नगरों में रहने वाली जनसंख्या विविधत–युक्त तथा विषम होती है। इस प्रकार नगर समाज की जटिल परस्पर क्रियाओं का स्थल होता है और इसीलिए नगर की समाजशास्त्र के अध्ययन विषय के रूप में सार्थकता बन जाती है।

*डॉ. श्यामा गोपन, शोधकर्ता, दक्षिण एशियायी विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

इस इकाई में ऐसे ही कुछ तत्वों पर विचार करेंगे। नगरों की समाजशास्त्रीय सार्थकता की व्याख्या से इस इकाई का आरम्भ करते हैं। इसके बाद नगरों की प्रमुख विशेषताओं उनके प्रकार तथा कार्यों का वर्णन करेंगे।

3.2 नगर

जब आप 'नगर' शब्द पर विचार करते है। तो आपके मस्तिष्क में क्या तस्वीर बनती हैं? ऊँची–ऊँची इमारतें तथा घरों से कार्यस्थलों व कार्यस्थलों से घरों की ओर जाते लोग, भरे–भरे पार्क, भीड़ भरे बाजार, दुकानों रेस्तराओं तथा मनोरंजन केन्द्रों से युक्त गलियां। जब हम नगरों के बारे में सोचते हैं तो हमारे विभागों में प्रायः ऐसी ही तस्वीरें उभरती हैं। निश्चित रूप से नगरों का एक भौतिक स्वरूप होता है, परन्तु नगर की समाजशास्त्रीय अवधारणा क्या है?

अन्य अनेक सामाजिक अवधारणाओं की तरह नगर की परिभाषा जटिल, विविधतायुक्त तथा अस्पष्ट होती है। यह अस्पष्टता उन सुविधाजनक बिंदुओं से उपतजी है जिन्हें समाजशास्त्री इस अवधारणा की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। कुछ समाजशास्त्री नगर में जनसंख्या के घनत्व पर जोर देते हैं, तथा कुछ रोजगारों की विविधता की बात करते हैं। अपने एक लेख 'व्हाट इज ए सिटी' में अमेरिकन इतिहासकार तथा समाजशास्त्री 'लुईस ममफोर्ड' ने नगर की परिभाषा करते हुए नगर को एक ऐसा क्षेत्र बताया है जिसमें अनेक प्रकार के व्यक्ति समूह, आर्थिक संगठनों और क्रिया कलापों में जुटे होते हैं। जिनका संचालन कुछ नियमों पर आधारित होता है तथा जो एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में निर्मित स्थायी संरचनाओं के अंतर्गत स्थित होते हैं (ममफोर्ड, 1937)। ममफोर्ड की परिभाषा के दशकों बाद अनेक परिभाषायें अस्तित्व में आई जिनमें नगर को अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ अधिक आबादी वाला तथा स्थायी बसावट कहा है जिसमें सामाजिक रूप से विषम समूह निवास करते हैं। (वर्थ, 1938) आइये अब इन सभी विवरणों पर विचार करें तथा इनकी समाजशास्त्र में सार्थकता का पता लगायें।

ग्रामीण क्षेत्रो की तुलना में नगरों में लाखों तथा उससे भी अधिक लोग निवास करते हैं। बड़ी संख्या में लोग व्यक्तिगत रूप से परिवर्तित और गुमनाम हो जाते हैं। यद्यपि व्यक्तिगत स्तर पर निकटता के कुछ संबंध जरूर विकसित हो जाते हैं परन्तु सामाजिक संबंध जो शहरों में आकार लेते हैं वे प्रायः कृत्रिम तथा अस्थायी होते हैं (वर्थ 1938, कर्माकार तथा रे चौधरी, 2015)। बड़ी संख्या में नगर में निवास करने वाले लोगों में कुछ खास विशेषताएं तथा विविधताएं होती हैं। जिनके रहते सामाजिक संबंध जटिल हो जाते हैं और लोगों में अलगाव की भावना आ जाती है, वे औपचारिकता के साथ ही संगठित होते हैं तथा औपचारिक पारस्परिकता का प्रदर्शन करते हैं। नगरों में जब हम विभिन्न प्रकार के व्यक्ति समूहों के संपर्क में आते हैं तो हम प्रायः जिन नियमों का पालन कर रहे होते हैं उनके प्रति अधिक जागरूक नहीं होते। नगरीय संबंधों की तुलना आप अपने अध्यापक तथा कपड़ों की सिलाई करने वाले व्यक्ति (दर्जी) से करेंगे तो आपको अंतर स्पष्ट समझ आ जायेगा। यह विविधता नगरों के लोगों को गतिशील तथा बहुआयामी बना देती है। नगरों में कड़ी सामाजिक संरचनाएं नहीं होतीं। इसके विपरीत गांवों में हर व्यक्ति के कोई न कोई पहचान होती है – जैसे किसी का बेटा या किसी का रिश्तेदार, परन्तु नगरों में एक व्यक्ति की पहचान उसके अपने गुणों से नहीं होती बल्कि उसके द्वारा अर्जित की जाने वाली उपलब्धियों से होती है। इसलिए शहरों में सामाजिक गतिशीलता अधिक होती है परन्तु साथ ही अस्थिरता और असुरक्षा भी होती है। नगर में रहते हुए आप एक साथ अनेक सामाजिक समूहों के सदस्य बन सकते हैं और कभी–कभी ऐसा भी होता है कि कोई

व्यक्ति दूर–दूर पहचान बना लेता है। नगरों में तरह–तरह के संगठन होते हैं – जैसे व्यावसायिक संगठन, मनोरंजन संघ, वैचारिक आधारों पर बने राजनैतिक संगठन तथा विश्वासों पर आधारित धर्मिक संगठन।

नगरों में जीवन का समाजशास्त्रीय अध्ययन जटिल होते हुए भी रुचिकर होता है। नगर मे जितने प्रकार के काम होते हैं, वह नगर सब कामों के लिए विख्यात हो जाते हैं और फिर यही उनका पहचान बन जाती है। समय और क्षेत्र के हिसाब से नगरों के कार्यों में विविधताएं रहती हैं। अगले खंड मे हम नगर के कार्यों पर विस्तार से विचार करेंगे। इससे पहले हमें नगर के भौतिक स्वरूप की विशेषताओं को जान लेना चाहिए।

3.3 नगरों का स्थानिक विन्यास

फ्रांस की राजधानी पेरिस को दुनिया का सबसे सुन्दर नगरों में माना जाता है। हर साल हजारों पर्यटक पेरिस आते हैं और नगर की चकित कर देने वाले सौंदर्य तथा वास्तुकला को निहारते हैं तथा फ्रांसीसी व्यंजन का आनंद लेते हैं। हवाई जहाज से देखने पर वाणिज्यिक गतिविधियों से सजी–संवरी गलियाँ नज़र आती हैं जिन्हें देखकर नगर की चमक–दमक और शान का अनुमान लगाय जा सकता है। आइये इस नगर की पृष्ठभूमि के बारे में जानें।

1848 में जब नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस का राष्ट्रपति बना था, उस समय उसे पेरिस नगर गंदगी, बीमारियों तथा भीड़ से भरा लगा। जीवन की गुणवत्ता तथा संसाधन भी निम्न स्तर के थे। उसने नगर के नवीनीकरण का फैसला लिया और अपने नौकरशाह जार्ज–इयूजीन हॉस्मन को नवीनीकरण का दायित्व सौंपा। हॉस्मेन ने नगर में मौजूद तमाम गंदी बस्तियों को तोड़ा गया उनके स्थान पर नई शानदार इमारतें बनवाई। नगर के पुनर्निर्माण से पहले नगर का एक शानदार नक्शा तैयार किया गया जिसमें एक जैसी ऊँची–ऊँची इमारतों वाली गलियों के निर्माण की योजना बनाई गई थी जो देखने में मुखाग्र लगती थी, पर नगर के केंद्र से बाहर की ओर फैली हुई थीं। नयी नगर–निर्माण योजना में दो उद्देश्य एक साथ पूरे हो रहे थे। एक ऐसे नगर का निर्माण किया जाय जिसे आसानी से देखा–परखा जा सकते और उस पर शासन करने में सुविधा रहे तथा नगर में वायु, जल तथा अन्य आवश्यक सेवाओं का उन्मुक्त प्रवाह सदा उपलब्ध हो। हॉस्मेन ने पेरिस नगर की योजना इतनी शानदार बनाई कि आज तक यह नगर दुनिया के श्रेष्ठतम नगर नियजकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

गतिविधि 1

जिस नगर में आप निवास करते हैं या जिसे अपने भलीं भांति देखा है, उसकी जनसंख्या का पता लगाइए। इस नगर के बाजारों का अध्ययन करिए, आवासीय क्षेत्रों तथा कार्यालय परिसरों का अध्ययन करिए। एक ऐसा नक्शा तैयार करिए जिसमें ये सभी क्षेत्र दिखाए गये हों। सामाजिक वर्ग तथा सामाजिक पृष्ठभूमि को भी दर्शाइए और 'मेरा नगर' शीर्षक से इस पर एक निबंध लिखिए। अपने अध्ययन केंद्र पर अपने साथियों तथा परामर्शदातों के साथ इस निबंध पर चर्चा के लिए।

हर नगर, चाहे वह नियोजित हो अथवा अनियोजित कुछ खास कार्यों को केंद्र में रखकर ही उसकी संरचना तैयार की जाती है, जिनके द्वारा वह अपने क्षेत्र को अपनी सेवाएं प्रदान करता है, यदि पेरिस अपनी शानदार वास्तुकला के लिए जाना जाता है तो न्यूयार्क ग्रिड वास्तुकला के लिए, शिकागो नगर संकेद्रिक क्षेत्रीय प्रतिमान के लिए जाना जाता है। नगर की संरचना का विश्लेषण अनेक सामाजिक पक्षों की अंतदृष्टि

दर्शाता है जिनमें नगर के अंदर मौजूद विभिन्न मानव–समूहों का स्थानिक वितरण भी शामिल है और नगर का प्रशासनिक ढांचा भी। नगर के प्रमुख घटकों में से एक बाजार होता है। (आर्थिक गतिविधियों का केंद्र) किसी नगर में उत्पादों तथा मुद्राा का प्रवाह बाजार पर अनिवार्य रूप से निर्भर करता है। नगर के व्यवसायों, आवासों, तथा नगर निवासियों के आर्थिक स्तर पर बाजार का तथा नगर की संरचना का विशेष प्रभाव पड़ता है।

अतः हम यहाँ नगर की आंतरिक संरचना के प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन करेंगे। आंतरिक संरचना नगर की भौतिक तथा सामाजिक संस्थाओं की स्थानिक व्यवस्थाओं को दर्शाती है तथा इन सभी तत्वों के बीच अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालती है। कृपया यह बात ध्यान में रखिए कि ये सिद्धांत व्यापक रूप से पश्चिमी समाजों के स्थानिक व्यवस्था पर आधारित हैं जहाँ नगरीकरण 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में तेजी से बढ़ा। यहाँ हम दो स्थानिक व्यवस्था प्रतिमानों पर विचार करेंगे – संकेद्रिक प्रतिमान तथा क्षेत्रीय प्रतिमान।

3.3.1 सघन क्षेत्र प्रतिमान

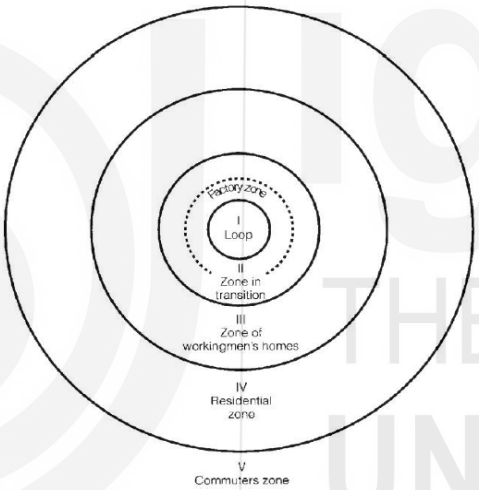

संकेंद्रिक वृत्ताकार मॉडल को वर्गीस मॉडल के नाम से भी जाना जाता हैं। नगर की संरचना पद्धति की व्याख्या करने वाला यह पहला आरम्भिक सिद्धांत है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री अर्नेस्ट वर्गीस ने किया था तथा इसे अमेरिका के शिकागो महानगर पर लागू किया गया था। उसने यह सिद्धांत बनाया था कि नगरीय क्षेत्रों को विकास के लिये विभिन्न क्षेत्रों में संकेंद्रिक वृत्तों में बांटा जाना चाहिये। नगर के बीचोबीन के क्षेत्र को सैन्ट्रल बिजनीस डिस्ट्रिक्ट (सीबीडी) कहा जाता है जो आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होता है। यह सबसे घना क्षेत्र होता है जिसमें बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक गतिविधियां होती रहती हैं। यह क्षेत्र शेष नगरीय क्षेत्र से अच्छी तरह जुड़ा होता है तथा सभी परिवहन प्रणालियों को इससे जोड़ा जाता है।

दूसरा प्रमुख क्षेत्र कर्मचारियों/श्रमिकों के निवास स्थलों का होता है। इस क्षेत्र में निवास करने वाले कर्मचारियों को सरकार कम कीमत पर घर प्रदान करती है तथा नगर के कामकाजी वर्ग को सरल आवागमन सुविधा प्रदान की जाती है। सीबीडी तथा कर्मचारी आवास क्षेत्र के बीच संक्रमण क्षेत्र होता है। इस क्षेत्र में वाणिज्यिक तथा आवासीय दोनों प्रकार की गतिविधियां होती हैं। इसके बाद बाहरी क्षेत्र होता है जिसे आवासीय क्षेत्र कहा जाता है। इस क्षेत्र में नगर के माध्यम वर्ग के लोग सुविधाजनक परिस्थितियों में निवास करते हैं। इस क्षेत्र में आवास स्थलों के निवास के लिये नई संभावनायें मौजूद रहती है तथा नागरिक सुविधायें भी – जैसे पार्क, उद्यान तथा मनोरंजन केन्द्र आदि। नगर के केन्द्रीय स्थल से सबसे अधिक दूरी पर जो क्षेत्र स्थित

होता है उसे उच्च आयु वर्ग का क्षेत्र कहा जाता है। नगर के चारों और बना यह क्षेत्र नगर के उच्च आय वर्ग के लोगों के लिये होता है। इस क्षेत्र में उन लोगों के लिए स्वतंत्र आवासी स्थल प्रदान किए जाते हैं जो इनकी कीमतें चुका सकते हैं और रहने के लिए शानदार घरों का निर्माण कर सकते हैं।

3.3.2 क्षेत्रीय प्रतिमान

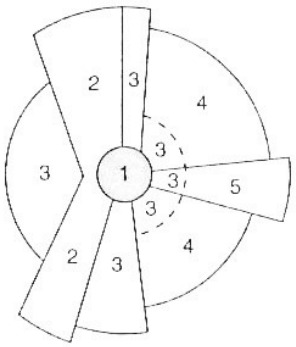

1) केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र
2) औद्योगिक क्षेत्र
3) श्रमिक वर्ग आवास
4) मध्यम वर्ग आवास
5) उच्च आय वर्ग आवास

1939 में अर्थशास्त्री होमर होयट ने क्षेत्रीय प्रतिमान प्रस्तावित किया था। इस स्थानिक व्यवस्था का हो पर मॉडल भी कहा जाता है। होयट की संकल्पना थी कि नगरों को कलाकार आकृति में अथवा संकेंद्रिक आकृति में नहीं बसाया जाना चाहिये जैसा कि वर्गीस का सिद्धांत कहता है। सैक्टर मॉडल में भी सघन आर्थिक गतिविधियों वाला क्षेत्र ही केन्द्र में होता है। यद्यपि होयट के अनुसार नगर का विस्तार सैक्टरों के आधार पर किया जाता है तथा इसे यातायात की सुविधाओं से जोड़ा जाता है। औद्योगिक क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार होता है। इस क्षेत्र को सड़क मार्गों तथा रेल मार्गों से जोड़ा जाता है। औद्योगिक क्षेत्र को भी सरल यातायात प्रणालियों से जोड़ा जाता है। औद्योगिक क्षेत्र से सटे बाहरी क्षेत्र में कर्मचारी वर्ग अथवा श्रमिक वर्ग अपने लिये आवास स्थल ढूंढता है और इसी क्षेत्र में वह घर बना कर रहता है। पांचवां सैक्टर उच्च आय वर्ग के लोगों का होता है। उच्च आय वर्ग के लोग वाणिज्यिक गतिविधियों वाले घने और भीड़ भरे क्षेत्रों से दूर नगर के बाह्य क्षेत्र में निवास करना पसंद करते हैं। इस क्षेत्र में नगर के वे लोग ही निवास करते हैं जो बड़े और साफ–सुथरे शानदार घरों में नगर के शोर शराबे से दूर रहना पसंद करते हैं। होयट का मॉडल महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें हर सेक्टर के विकास की दिशा तथा दूरी पर पूरा ध्यान दिया जाता है। इसमें हर सेक्टर के लोगों को यातायात प्रणालियों से जोड़ने पर ध्यान दिया जाता है जिससे नगर की स्थानिक व्यवस्था चाक–चौंबद रहती है।

बोध प्रश्न 1

1) होयट मॉडल संकेंद्रिक क्षेत्र प्रतिमान में रह गई कमियों को किस प्रकार दूर करता है जिससे नगर का स्थानिक विन्यास संतोषजनक हो पाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बर्गीज तथा होयट के प्रतिमानों की समानताओं की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 नगरों का वर्गीकरण

नगरों का वर्गों में स्पष्ट रूप में विभाजित करना कठिन है क्योंकि नगरों की परिभाषा करने तथा उन्हें श्रेणीबद्ध करने का कोई सामान्य व मान्य आधार मौजूद नहीं है। अतः दिमाग में यह बात बिठा लेनी चाहिए कि यदि कोई नगरों को विभिन्न वर्गों में विभाजित करके देखता है तो यह उसकी व्यक्तिपरक धारणा या संकल्पना ही कही जायेगी। नगर में अनेक प्रकार के काम होते हैं इसलिए किसी नगर को एक खास श्रेणी में नहीं बाँधा जा सकता। लेकिन फिर भी हम यह मानकर चल सकते हैं कि हर नगर में कुछ न कुछ बात होती है अर्थात वह किसी कार्यविशेष पर सबसे ज्यादा जोर देने लगता है, आधुनिक नगरों में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। अमेरिकन समाजशास्त्री गिडियन स्जोबर्ग ने वैश्विक नगरीय केंद्रों को दो वर्गों में विभाजित किया है – पूर्व–औद्योगिक नगर तथा औद्योगिक नगर स्जोबर्ग के अनुसार पूर्व औद्योगिक नगर वे हैं जिनमें जटिल प्रौद्योगिक विकास नहीं हुआ है। इनका विकास जानवरों तथा मनुष्यों के श्रम पर निर्भर करता है। ये ही नगर के उत्पादन के प्रमुख साधन होते हैं। जबकि औद्योगिक समाजों ने पर्याप्त प्रौद्योगिक तथा वैज्ञानिक विकास कर लिया है तथा इनका विकास ऊर्जा के आधुनिकतम माध्यमों जैसे, परमाणु ऊर्जा तथा जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर करता है (स्जोबर्ग 1960)। स्जोबर्ग ने इस वर्गीकरण को 1960 में तैयार किया था जिस समय पश्चिमी समाज मुख्य रूप से वैज्ञानिक अनुसंधानों पर जोर दे रहे थे। फिर भी, आज वैश्वीकरण के पश्चात् जबकि अधिकतर गैर–पश्चिमी समाज नगरीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, स्जोबर्ग का विचित्र वर्गीकरण व्यर्थ या अर्थहीन या गैर व्यावहारिक साबित हो सकता है।

गतिविधि 2

भारत के कुछ बड़े औद्योगिक नगरों की सूची तैयार कीजिए जो आजादी के बाद भारत में अस्तित्व में आए हैं। अपने अध्ययन केंद्र पर अपने साथियों द्वारा तैयार की गई नगरों की सूचियों से इस सूची की तुलना करिए।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री नोएल जिस्ट तथा एल ए हेलबर्ट ने आधुनिक नगरों के समग्र वर्गीकरण का प्रयास किया है। उन्होंने नगरों का उनकी प्रमुख गतिविधियों के आधार पर छः वर्गों में बांटा है –

I) उत्पादन केंद्र –आरंभिक नगरों के उद्भव में औद्योगीकरण ने प्रमुख भूमिका निभाई है इससे पहले वाली इकाई में आपने पढ़ा था कि बाजारों के उदय और उत्पादन के संपन्न केंद्रों ने लोगों रोजगार के नए–नए अवसर प्रदान किए और उन्हें नगरीय केंद्रों की ओर जाने के लिए अभिप्रेरित किया। अधिकतर पुराने नगरों के का विस्तार इसी तरह हुआ है। छत्तीसगढ़ का भिलाई नगर, तमिलनाडु का कोयम्बटूर आंध्र प्रदेश का अडोनी तथा पंजाब का जलंधर नगर भारत के कुछ

प्रमुख औद्योगिक नगर हैं जो उत्पादन व रोजगार के बड़े केंद्र बने हुए हैं। उत्पादन केंद्रों को भी इस आधार पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है – उत्पादन के साथ–साथ उत्पादन के लिए कच्चे माल की पूर्ति करने वाले उत्पादन केंद्र तथा केवल उत्पादन की प्रक्रिया में जुटे उत्पादन केंद्र।

II) व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियों के केंद्र –मध्य युग में व्यापारी समूह बनाकर काम करते थे तथा व्यापारियों की वित्तीय जरूरतों की पूर्ति करते थे। आधुनिक राज्यों में ये कार्य वाणिज्यिक केंद्र करते हैं। ये केंद्र राज्य या देश के वित्तीय केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। भारत के मुम्बई, विशाखापतनम तथा कोचीन जैसे महानगर समुद्र तटीय यातायात सुविधाओं के कारण वित्तीय केंद्र बन गए और इन महानगरों ने नये–नये व्यापारिक मार्ग तलाशे।

III) पूंजी तथा प्रशासनिक केंद्र –ये नगर शक्ति और राजनीति के केंद्र हैं। शक्ति–सम्पन्न होने के कारण ऐसे नगर वाणिज्यिक तथा उत्पादन गतिविधियों को सफलतापूर्वक सम्हालने की क्षमता रखते हैं। इनमें प्रशासनिक कार्य अन्य सभी भूमिकाओं पर हावी हो जाते हैं। भारतीय राज्यों के राजधानी नगर जैसे गांधीनगर, तिरूअनंतपुरम, दिसपुर, तथा इम्फाल आदि इस क्षेणी के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। अन्य राजधानी नगर जैसे पाटलीपुत्र (वर्तमान पटना), दिल्ली व कलकत्ता, पूर्ववर्ती राजवंशों तथा उपनिवेश के लिए सुप्रसिद्ध प्रशासनिक केंद्र बने हुए हैं। इन राजवंशों के पतन के बाद इन नगरों को नयी राजनैतिक व्यवस्थाओं ने राजधानियों के रूप में अपना लिया।

IV) स्वास्थ्य एवं मनोरंजन केंद्र –ये वे नगर हैं जो अपने नैसर्गिक सौंदर्य तथा पर्यटन के लिए जाने जाते हैं। प्रशासनिक अथवा व्यापारिक परिप्रेक्ष्य के बिना भी ये नगर प्रमुख नगरीय केंद्रों के रूप में ख्याति प्राप्त हैं, क्योंकि ये बड़ी संख्या में दुनिया के कोने–कोने से सैलानियों को आकर्षित करते हैं जिसके कारण इन नगरों में उत्पादों तथा मुद्रा का उन्मुक्त प्रवाह बना रहता है।

V) धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र –भारत के पास एक समृद्ध धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत है। बनारस, अमृतसर, जयपुर, तिरूपति, हाम्पी तथा अजमेर जैसे नगर अपने समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक संबंधों के कारण अत्यधिक आकर्षक आधुनिक नगर बने हुए हैं।

VI) विविधतायुक्त नगर –अब तक आप एक बात अवश्य समझ गए होंगे कि कोई भी नगर किसी विशिष्ट भूमिका के लिए पूरी तरह से सीमित नहीं किया जा सकता। नगर इस बात के लिए स्वतंत्र होते हैं कि वे किस रूप में अपनी पहचान बनाएं। इसलिए भारत में बड़ी संख्या में ऐसे नगर भी मौजूद हैं जो अनेक प्रकार की गतिविधियों तथा अतिव्यापी भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) स्जोबर्ग के वर्गीकरण की सीमाओं के बारे में आप क्या सोचते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या आप यह सोचते हैं कि नोएल तथा हेलबर्ट का वर्गीकरण आधुनिक नगरों के लिए अधिक सार्थक है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 नगरों के कार्य

आपने ऊपर नगरों के वर्गीकरण के बारे में पढ़ा। यह वर्गीकरण प्रायः इस आधार पर किया गया है कि किसी शहर में मुख्यतः कौन सी गतिविधियां होती हैं। फिर भी, एक कदम और आगे बढ़ते हुए हमें किसी नगर के भौगोलिक, आर्थिक तथा राजनैतिक महत्व को भी समझना चाहिए। यह बताता है कि नगर केवल अपने अंदर रहने वाले लोगों के लिए ही उपयोगी नहीं होते, अपितु उन व्यापक क्षेत्रों के लिए भी उपयोगी होते हैं जो उनके जुड़े होते हैं। यह समझने के लिए हम अमेरिका के नगरों में किए गए कार्य आधारित सैद्धांतिक सर्वेक्षणों का अध्ययन करेंगे।

अपने महत्वपूर्ण सर्वेक्षण 'द नेचर ऑफ सिटीज़' में चौंसी डी. हेरिस तथा एडवार्ड एल. उलमान ने यह बताया है कि नगर प्रायः एक या नीचे बताई गई तीन भूमिकाएं निभाते हैं–

i) **केंद्रीय स्थानों के नगर के रूप में** –अपने आस–पास के क्षेत्र के लिए नगर प्रायः व्यापार, सम्पर्क, नैटवर्क व संस्कृति के मामले में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। ये केंद्र कभी बहुत छोटे स्तर पर भी काम करते दिख सकते हैं, जैसे – एक छोटी बस्ती के रूप में या छोटे कस्बे के रूप में या फिर न्यूयार्क जैसे किसी महानगर के रूप में भारत में नई दिल्ली नगर राजनैतिक केंद्र का एक उपयुक्त उदाहरण है। आजकल अनेक नगर विभिन्न प्रकार की व्यापार, तथा संचार से जुड़ी गतिविधियों के केंद्रीय, स्थलों के रूप में उभरते जा रहे है जिनके संबंध उनसे जुड़े व्यापक क्षेत्रों से हैं।।

ii) **यातायात के केंद्रों के रूप में पहचाने जाने वाले नगर** –ये नगर चीजों के भुगतान तथा जहाज में लदे हुए माल के प्रवेश द्वार होते हैं। अपनी यातायात प्रणालियों तथा स्थानिक विशेषताओं के कारण मुम्बई तथा विशाखापटनम जैसे महानगर जहाज यातायात के केन्द्र अथवा पड़ावों के रूप में प्रसिद्ध हो गये हैं। जहां से व्यापक क्षेत्रों में जाने वाले अनेक यातायात मार्ग निकलते हैं। इन नगरों में अन्य सहयोगी सेवाओं के केन्द्र भी स्थापित हो जाते हैं जैसे – माल भण्डारण केंद्र, जटिल संभार तंत्र मूल्य संवर्धन केन्द्र आदि। इसके कारण नगर का बड़े पैमाने पर विस्तार होता चला जाता है तथा यातायात संबंधी सुविधाओं का एक व्यापक जाल तैयार हो जाता है। समुद्र तटीय नगरों में इन सुविधाओं का लगातार विस्तार होता चला जाता है। 1945 में चौसी और एडवार्ड ने सुझाव दिया था कि वायु मार्गों के विकास के कारण भविष्य में नगरों की विकास पद्धतियों में बड़े बदलाव आ जायेंगे। उनकी बात सच साबित हुई है, आजकल हम देखते हैं कि अधिकतर भारतीय नगर सीमा पार के क्षेत्रों तथा समुद्र पार के क्षेत्रों में भी वस्तुओं के लेन–देन और व्यापार की सुविधाओं से सम्पन्न हो गये हैं।

iii) जटिल सेवाओं के केन्द्र के रूप में विकसित नगर –अपने स्थानीय संसाधनों अथवा रणनीतिक स्थितियों की गुणवत्ता के कारण कुछ नगर विशिष्ट सुविधाएं प्रदान करने का काम करते हैं। ऐसे नगरों में विशिष्ट उद्योगों अथवा सेवाओं के केंद्र स्थापित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग नगर अनुकूल जलवायु स्थितियों के कारण बड़े पैमाने पर चाय बागान विकसित हो गये हैं। अपनी इस विशेषता के कारण दार्जिलिंग नगर पर्यटन केंद्र तथा निर्यात केंद्र के रूप में विकसित हो गया है। भारत में अनेक नगर भारत के औद्योगिक क्षेत्रों से सटकर विकसित हुए हैं, जैसे – छोटा नागपुर क्षेत्र, कोलम, तिरूअनंतपुरम अथवा बेंगलूरू, चेन्नई जैसे नगर अपनी अनुकूल स्थितियों के कारण खदान, शिक्षा, निर्माण अथवा मनोरंजन संसाधनों के केंद्र के रूप में विकसित हो गये हैं (हेरिस तथा अलमेन, 1945)।

एक बात ध्यान रखिए एक नगर में अनेक कार्यों को करने की क्षमताओं के विकसित होने की संभावनाएं छिपी होती हैं। यदि आपको किसी नगर में कोई एक काम बहुतायत के साथ नजर आ रहा है तो उसे देखकर आप इस निष्कर्ष पर मत पहुंचिए कि उस नगर में कोई और काम होता ही नहीं है। जैसाकि हमने पहले के खंडों में वर्णन किया है एक नगर में एक से अधिक कार्यों का विश्लेषण करने की कसौटियां विद्यमान रहती हैं। चौंसी तथा एडवार्ड द्वारा बताए गये कार्यों के अलावा भी अनेक प्रकार के कार्य नगरों में मौजूद हो सकते हैं।

गतिविधि 3

अपने नगर में होने वाले प्रमुख कार्य की पहचान कीजिए। फिर समूह के बीच जाकर इस विषय पर चर्चा कीजिए कि इस कार्य ने आपके नगर के निम्न मानकों को किस प्रकार प्रभावित किया है।

- राजेगार का स्तर
- संस्कृति
- व्यापार एवं वाणिज्य

3.6 नगर तथा वैश्विक सुधार

इस खं डमें हम परिवर्तन के उन मानकों की व्याख्या करेंगे जो नगरों में वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न हुए हैं। नगरीकरण की प्रक्रिया तथा नगरों का उद्भव केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं होता है जैसाकि उन्हें देखने पर लगता है। एक नगर अंदर से भी बदलता है और बाहर से भी बदलता है। नगर के आंतरिक तथा बाह्य बल नगर के आकार में लगातार परिवर्तन लाते रहते हैं। यहां हम संक्षेप में दो वैश्विक घटनाओं का वर्णन करेंगे जो भारत के बाहर घटित हुई थीं परन्तु उन्होंने भारतीय नगरों पर अपना प्रभाव डाला।

वास्तव में नगर तो औद्योगिक क्रांति से पहले भी मौजूद थे परन्तु 18वीं शताब्दी में आई क्रांति ने दुनिया में अप्रत्याशित रूप से नगरीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। नये कारखानों के स्थापित होने से वेतन भोगी कर्मचारियों की मांग में भारी वृद्धि हुई। इधर कृषि आधारित समाज खेती–बाड़ी का काम छोड़कर स्थायी आय के साधनों तथा रोजगार के कारण नगरों में आकर बस गये। मजदूरों की मांग इतनी बढ़ी कि लोगों ने अपने घरों की स्त्रियों और बच्चों को भी रोजगार की तलाश में शहर भेज दिया।

बाल मजदूरी और असुरक्षित कार्य स्थितियां उस समय व्यापक रूप से विस्तार पर गई थीं। नतीजा यह हुआ कि नगरों में ऐसी बस्तियों की संख्या बढ़ गई और नगरों में गंदगी और अस्वच्छता में बेतहाशा वृद्धि हुई। कारखानों तथा गैर–जिम्मेदार प्रशासकों के कारण नगरों में जनसंख्या तो बहुत बढ़ गई परन्तु कचरा या गंदगी प्रबंधन की अक्षमता के कारण शहर रहने योग्य नहीं रहे। जैसाकि पहले खंड में बताया जा चुका है। मजदूर वर्ग कारखानों के निकटवर्ती क्षेत्र में ही रहना पसंद करते थे, जबकि उच्च आय वर्ग के लोग नगरों के बाहरी क्षेत्रों में बसे उपनगरों में स्वच्छ व आरामदायक घरों का निर्माण करके रहते थे। वे कारखानों से बहुत दूरी पर निवास करते थे इसलिए नगर के अंदर ही स्थानिक अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। परन्तु इसमें दो रूप नहीं है कि औद्योगिक नगरों में अत्यधिक उत्पादन भी हुआ और रेल व सड़क मार्गों का निर्माण भी हुआ और नगर का विद्युतीकरण भी हुआ।

नगरों मं उल्लेखनीय परिवर्तन आने का दूसरा बड़ा कारण 1980 में आरंभ हुआ वैश्वीकरण है। इस दौरान भारत में नये प्रशासनिक कदम उठाये गए, वित्तीय क्षेत्र का तो एक तरह से अंतर्राष्ट्रीयकरण ही हो गया था। (सेसन, 2000)। नगरों में भारी नीतिगत परिवर्तन लाए गए ताकि वे अंतर्राष्ट्रीय निगमों की आकर्षित कर सकें। नयी व्यापार संबंधी प्रविधियों को अपनाने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से यह सब संभव हो सका (केस्टेल्स, 2011)। 1985 में कर्नाटक के बेंगलूरू नगर का इलैक्ट्रोनिक विशेषज्ञता के केंद्र के रूप में उभरता एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। बेंगलूरू में टैक्साल को 'टैक्सास इंस्ट्रूमेंट' कम्पनी का आना, अमेरिका के निगमों का बेंगलूरू में काम शुरू करना, आदि से बेंगलूरू एक वैश्विक नगर बन गया और वहाँ अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने अपने कार्यालय खोल दिए। स्थानीय सरकार अंतर्राष्ट्रीय निगमों को भारत में व्यापार करने में सहयोग देने के लिए प्रशासनिक नियमों में पर्याप्त रूप से सुधार किये। व्यापार करने के लिए लाइसेंस बनाने के नियम सरल बना दिये गये, करों में संशोधन किए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियाँ प्रतिस्पर्धा के साथ बेंगलूरू में काम करने में सुविधाजनक स्थिति में आ गई और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलने के साथ–साथ उपभोक्ताओं को भी अच्छी गुणवत्ता के चीजें उपयुक्त कीमत पर मिलने लगी। बेंगलूरू में निर्मित स्थानीय सॉफ्टवेयर बहुत लोकप्रिय हुए और नगर के उत्पादों की विदेशों में मांग बढ़ गई (क्लार्क, 2016)। बेंगलूरू की स्थानिक तथा सामाजिक संरचना में नगर के सूचना प्रौद्योगिकी के केंद्र बन जाने के कारण क्रांतिकारी परिवर्तन आ गए। नगर के प्रशासन तथा स्थानीय कौशल–युक्त कर्मचारियों ने वैश्विक मांग की कसौटियाँ पर खरा उतरने के लिए पूरा जोर लगा दिया और देखते ही देखते नगर के व्यावसायिक स्तर में अद्वितीय उछाल आ गया।

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने यह बताया कि नगर क्या होते हैं तथा नगरों की परिभाषा करना कठिन क्यों हैं? हमने नगर की समाजशास्त्री प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया। इसके अलावा हमने नगरों के स्थानिक संरूपण को समझाया, नगरों के कार्यों का वर्णन किया तथा बताया कि नगर के निवासी साथ–साथ रहते हुये भी किस प्रकार स्थानिक पृथक्करण की स्थिति में होते हैं।

हमने दो प्रतिमानों का विस्तार से वर्णन किया – सघन क्षेत्र प्रतिमान तथा क्षेत्रीय प्रतिमान जिससे नगर के भौतिक व सामाजिक तत्वों के स्थानिक पृथक्करण की अंतर्दृष्टि का पता लगाया जा सके। बाद के खंडों मे आपको नगरों के वर्गीकरण कुछ मानदंडों में अवगत कराया गया। गिडियन स्जोबर्ग तथा नोयल हैलबर्ट द्वारा प्रस्तावित

नगर श्रेणियों पर प्रकाश डाला गया। नगरों के कार्यों के बताने के पीछे यह उद्देश्य रहा कि आपको यह अनुभव कराया जा सके कि नगर केवल अपने अंदर निवास करने वाले नगरवासियों के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं होते, अपितु नगर से जुड़े आसपास के व्यापक क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए भी उपयोगी होते हैं।

अंत में हमने नगरों की विकास पद्धतियों में आए उन परिवर्तनों से भी आपको अवगत कराया जो उनमें वैश्विक सुधारों के कारण आए। हमने इतिहास की दो प्रमुख घटनाओं की दो प्रमुख घटनाओं का उल्लेख किया – 18वीं शताब्दी का औद्योगीकरण तथा 21वीं शताब्दी का वैश्वीकरण। इसका उद्देश्य इन घटनाओं के नगरों के सामाजिक तथा आर्थिक ढांचे पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देना था।

3.8 संदर्भ

Castells, Manuel. *The rise of the network society.* John Wiley & sons, 2011.

Clark, Greg. "How cities took over the world: a history of globalisation spanning 4,000 years." *The*

Guardian, December 1, 2016.

Ford, Larry R. "The Urban Housetype as an Illustration of the Concentric Zone Model: ThePerception of Architectural Continuity." *Journal of Geography* (Taylor & Francis) 73, no. 2 (1974): 29-39.

Harris, Chauncy D, and Edward L Ullman. "The nature of cities." *The annals of the American academy of political and social science* (Sage Publications) 242, no. 1 (1945): 7-17.

Karmakar, Asmita, and Souvik Raychaudhuri. "Loneliness & depression: An urban syndrome." *The International Journal of Indian Psychology* 2, no. 4 (2015): 174--182.

Mumford, Lewis. "What is a city." *Architectural record* 82, no. 5 (1937): 59-62.

Sassen, Saskia. "Globalisation and telecommunications." *Urban Forum* 11, no. 2 (2000): 185-200.

Sjoberg, Gideon. *The preindustrial city: past and present.* 1960.

Wirth, Louis. "Urbanism as a Way of Life." *American journal of sociol*ogy 44 (1938): 1-24.

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) होयट मॉडल हर क्षेत्र के विकास की दिशा और दूरी पर विचार करता है। यह नगर की स्थानिक व्यवस्था में यातायात प्रणालियों को एक महत्वपूर्ण मानक के रूप में स्वीकार करता है जिस पर संकेंद्रिक क्षेत्र प्रतिमान में विचार नहीं किया गया है।

2) दोनों प्रतिमान नगर की स्थानिक व्यवस्था में व्यापारिक जिले को नगर के केन्द्र में रखता है। इससे यह पता लगता है कि नगर के स्थानिक संरूपण में आर्थिक गतिविधियों को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है।

बोध प्रश्न 2

1) सिजोबर्ग नगरों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है – पूर्व औद्योगिक नगर और औद्योगिक नगर। सिजोबर्ग ने इस वर्गीकरण की संकल्पना 1960 के दशक में की थी। जब पश्चिमी देश विशेष रूप से वैज्ञानिक अनुसंधानों में लगे थें आज जबकि वैश्वीकरण हो चुका है, अधिकतर गैर पश्चिमी देश व्यापक नगरीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे में सिजोबर्ग का अति सामान्यीकृत वर्गीकरण व्यर्थ साबित हो सकता है।

2) नगरों द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्यों के आधार पर नगरों का व्यापक तथा विविध वर्गीकरण सही पाया गया है। यद्यपि कोई नगर केवल एक कार्य विशेष ही सम्पन्न नहीं करता, वह अनेक कार्यों को अंजाम देता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY